Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 7, September-2018, ISSN 2230-7540

भास के नाटकों का राजनैतिक अध्ययन

Rajni Mudgal[1]* Dr. Sukdev Bajpaye[2]

[1] Research Scholar, Swami Vivekanand University, Sagar (M.P.)

[2] Associate Professor, Sanskrit Department, Swami Vivekanand University, Sagar, (M.P.)

सार – ***भास के नाटकों में उत्तर भारत की राजनीतिक दशा का वर्णन पाया जाता है। इनके रूपकों में भारत के अनेक देशों के नाम और उनकी राजनीतिक व्यवस्थाओं की छाया स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इन्होंने भारत के अनेक प्रसिद्ध नगरों का वर्णन किया है। इनके नाटकों की भौगोलिक स्थिति के अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत की राजनीति का गहरा ज्ञान था। अपने विभिन्न नाटकों में रामेश्वरम्, अयोध्या, मथुरा, काशी, उज्जैन,मगध, बद्रीनाथ, उत्तरकुरू, अवन्ती, महिष्मती आदि स्थानों के उल्लेख से भी सिद्ध होता है कि वे तात्कालिक राजनीति के अच्छे जानकार थे।***

----------X----------

प्रस्तावना

भास के नाटकों में राजकीय शासन व्यवस्था, न्याय, अपराधियों के लिए दण्ड विधान आदि का जो वर्णन पाया जाता है, वह मौर्यकालीन राजनीति से मिलता-जुलता है। साहित्य में राजनीति का वास्तविक प्रतिबिम्ब साहित्य में दृष्टिगोचर होता है, और साहित्य का उत्कृष्ट रूप नाट्य (रूपक) है। अध्ययेतव्य प्रमुख संस्कृत रूपकों में वर्णित नाट्य विषय तत्कालीन राजनीति को उपस्थित कर के पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है, जिसके माध्यम से पूर्वकालीन राजनीतिक-शास्त्रीय परिस्थितियों से अवगत होकर,उससे प्रेरणा ग्रहण करता है।

संस्कृत साहित्य में 'भास' को आदि और प्रामाणित रूपककार की श्रेणी में स्वीकार किया जाता है। इनके रूपकों में चित्रित राजनीतिक दशा के आधार पर भास के तेरह नाटकों से अध्ययेतव्य प्रमुख समाजशास्त्रीय (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, पारिवारिक आदि) दृष्टिकोण से अध्ययन और अनुशीलन के विषय हैं, जिनका परिचय संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत है-

प्रतिमा नाटकम्-प्रतिमानाटकम्' रामकथा पर आद्वृत सप्त आंकड़ों में निबद्ध प्रमुख रूपक विधा है। इसके कथानक का आधार रामायाण के अयोध्याकाण्ड और अरण्यकाण्ड का वृत्त हैं। इसमें रामवनवास, सीताहरण आदि घटनाओं का वर्णन किया गया है। केकय-देश से अयोध्या आगमन काल में देवकुल में स्थापित दशरथ प्रतिमा का अवलोकन करने के पश्चात् भरत (दशरथपुत्र) को पिता की मृत्यु का अनुमान हो जाता है, जिस कारण से नाटक का नामकरण 'भास' के द्वारा 'प्रतिमानाटकम्' किया गया। प्रतिमानाटकम् के माध्यम से कला-विषयक नवीन-वृतान्त का भी परिज्ञान होता है, जो अध्ययन और अनुशीलन के लिए हमारे सामने राजनीति शास्त्रीय दृष्टिकोण उपस्थित करता है। राजनीतिक परम्परा में बड़ा राजकुमार ही शासनाधिकारी होता है। भरत का अपने बड़े भाई के प्रति स्नेह और त्याग प्रचलित राजनीतिक परम्परा से हटकर है। जहाँ राजसत्ता के लिए एक भाई दूसरे भाई की हत्या कर देता है, वहीं यह नाटक एक अलग ही प्रतिमान खड़ा करता है।

अभिषेक-नाटकम्-समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन और अनुशीलन का विषय द्वितीय रूपक 'अभिषेक-नाटकम्' है। अभिषेक-नाटकम् में राम के राज्याभिषेक के साथ ही सुग्रीव के राज्याभिषेक का भी वर्णन है। अभिषेक की विषय मुख्यता के कारण ही सम्भवतः भास ने नाटक को 'अभिषेक नाटकम्' संज्ञा प्रदान की। अभिषेक नाटक की अङ्क योजना छः है। इस नाटक से सिद्ध होता है कि भास के समय राज्याभिषेक राजनीतिक परम्परा का एक अपरिहार्य अंग था।

मध्यम-व्यायोग-रूपक के दश भेदों में व्यायोग में 'मध्यम-व्यायोग' रूपक विधा है। मध्यम-व्यायोग में मध्यम पाण्डव 'भीम' की कथा वर्णित है, जो एक ब्राह्मण बालक की राक्षस

www.ignited.in

से रक्षा करता है। रूपक के मुख्य भेद 'व्यायोग' का 'मध्यम-व्यायोग उत्कृष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है-

मध्ययोऽहमवध्यानामुत्सिक्तानां च मध्यमः।

मध्यमोऽहं क्षितौ भद्र भातृणामपि मध्यमः।।1

पंचरात्रम्-रूपक के दश भेदों में 'समवकार' रूपक विधा के अन्तर्गत 'पंचरात्रम्' रूपक को स्वीकृति प्राप्त है। पंचरात्रम् तीन अड्.कों में निबद्ध है, जिसकी कथावस्तु महाभारत-महाकाव्य पर आश्रित है। 'पंचरात्रम्' रूपक कथानक पंच रात्रियों की घटना से सम्बद्ध है, जिसमें द्रोण को दुर्योधन की शर्त के अनुसार अज्ञात वास करने वाले पाण्डवों को पंच रात्रियों में ही ज्ञात करना था, तदुपरान्त ही पाण्डव शर्त के अनुसार राज्य के लिये अधिकारी हो सकते है। इससे तात्कालिक राजनीति की स्पष्ट छाया दिखती है। अपने अधिकारों को पाने के लिए एक राजा किस प्रकार संघर्ष करता है, यह इसमें दिखाया गया है। राजनीति में युद्ध और छल की बातें भी होती थीं।

प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्-प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् चार आंकड़ों का 'स्वप्नवासदत्तम्' नाटक के पूर्वार्द्ध-भाग का प्रमुख नाटक है। राजा महासेन के द्वारा कपटपूर्वक उज्जयिनी के राजा उदयन को बन्दी बना लिया जाता है, तत्क्षण उदयन का मन्त्री यौगन्धरायण उदयन को बन्धनमुक्त करने की दृढ़ प्रतिज्ञा के कारण नाटक का नाम 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' हुआ। 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' नाटक के बारे में कहा गया है

यह नाटक मन्त्री की दृढ़-प्रतिज्ञा तथा कुटिल -नीति का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है।

इस कारण से 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रूपक अनुशीलन का मुख्य विषय है।

चारूदत्तम्- यद्यपि भासकृत चारूदत्त रूपक प्रकरण है, और यह रूपकपूर्ण नहीं है, क्योंकि इसके चार ही अड्.क प्राप्त होते है। इसमें प्राचीन जीवन किस प्रकार सम और विषम-परिस्थितियों में उत्थान और पतन की ओर प्रवृत्त हो सकता है-यह चारूदत्त कथा के माध्यम से निरूपित किया गया है।

भास कृत दरिद्रचारूदत्त प्रकरण में चरित्रवान निर्धन चारूदत्त और वारड्.गना गुणवती बसन्तसेना का प्रेमाख्यान वर्णित है, जिससे तत्कालीन समाज की यथास्थिति की जानकारी प्राप्त होती है।इसके आधार पर परवर्ती युग में शूद्रक ने मृच्छकटिकम् को उपवृंहित किया।

अविमारकम्- 'अविमारकम्' रूपक की भास कृत प्रकरण विधा है, किन्तु समस्त विद्वान 'अविमारक' को प्रकरण स्वीकार करने में एकमत नहीं है, क्योंकि नायक राजपरिवार से सम्बन्धित है, जबकि प्रकरण के नायक को विप्र, वणिक अथवा अमात्य आदि होना चाहिए-

अमात्यविप्रवणिजामेकं कुर्याच्च नायकम्।

प्रजा-पीड़क राक्षस 'अवि' को मारने के कारण इसके नायक विष्णुसेन का नाम 'अविमारक' प्रचलित किया गया। वस्तुतः अविमारक कविकल्पित रूपक है। कविकल्पित रूपक होने पर भी स्वकथानक के माध्यम से राजनीतिक और सामाजिक मान्यताओं का निदर्शक है।

बालचरितम्-बालचरितम् 'भागवत्कथाश्रित बाल कृष्ण की लीलाओं के कथानक से युक्त भास कृत प्रमुख रूपक है। बालचरितम्' का कथानक पाँच अड्.कों में निबद्ध है। यद्यपि बालचरितम् 'नाट्य नियमों के विपरीत है, क्योंकि इसमें किसी एक प्रमुख कार्य की ओर उन्मुख समग्र प्रवृत्तिशीलता का अभाव है, किन्तु अन्यत्र दुर्लभ ग्राम्य-दृश्य वर्णन की उपलब्धियों से समवेत होने के कारण भासकृत प्रमुख और अनुशीलन के योग्य रूपकों में परिगणित है। नाटक का मुख्य प्रयोजन कृष्ण के द्वारा कन्सवध करना है, जिसके माध्यम से भास ने कृष्ण के बालचरित्र से सम्बन्धित चरितावली का नियोजन सम्यक् रूप से किया है। तृतीय और चतुर्थ अड्.क में क्रम से विस्तार पूर्वक अरिष्टासुर और कालिय नाग का दमन वर्णित है। कृष्ण के बालचरित का दिग्दर्शक होने के कारण ही बाल-अभिरूचि के साथ ही वृन्दावन क्षेत्र, यमुना नदी आदि प्राकृतिक, भौगोलिक वातावरण का विषय समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अन्तर्गत अनुशीलित और सम्मिलित करने योग्य है।

कर्णभारम्- कर्णभारम् भास कृत राजनीतिक तत्त्व प्रधान एकां.की रूपक विधा है। भास कृत रूपक कृतियों में 'प्रतिमानाटकम्' में 'प्रतिगृह्यतां राज्यभारः भरत का राम के प्रति कथन और प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् में 'हंसक पात्र से यौगन्धरायण का कथन 'महान खलु भारः तस्य निस्तीर्णः' में प्रयुक्त भार शब्द का अर्थ हस्त गृहीत कर्म' को स्वीकार करके कर्णभारम्' रूपक में कर्ण के द्वारा इन्द्र को कवच कुण्डल प्रदान करने की घटना का उल्लेख है। इस नाटक के द्वारा धर्मप्रियता को राजनीति में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। एक राजा के लिए उसकी शक्ति बहुत बड़ी वस्तु होती है किन्तु इसमें दानप्रियता को अधिक महत्त्व दिया गया है।

www.ignited.in

यहाँ हम उनके नाटकों में वर्णित तात्कालिक राजनीति के महत्त्वपूर्ण तथ्यों को सामने लाने का प्रयास करेंगे।

भौगोलिक

महाकवि भास ने अपने नाटकों में भारत के विविध राज्यों का उल्लेख किया है। इससे पता चलता है कि उस समय की राजनैतिक स्थिति किस प्रकार की थी? उनके नाटकों में अंग, सौवीर, सौराष्ट्र, वंग, वत्स्य, शूरसेन, अवन्ती, विदेह, लंका, मद्र, मिथिला, उत्तरकुरु, मगध, कुरुजांगल, कम्बोज, कुरु, कोशल, काशी, कुन्तिभोज, गान्धार, जनस्थान, दक्षिणापथ आदि नगरों एवं राज्यों का उल्लेख किया है। हम यहाँ पर संक्षेप रुप में भासकालीन राजनैतिक स्वरुपों पर विचार करेंगे।

भास के समय मौर्यवंशीय शासन की अवस्था का वर्णन किया गया है। कवि को उस समय की राजनीतिक स्थिति की गहरी पकड़ थी। भारत में मौयवंशीय शासनाधिकार अति विस्तृत एवं प्रभावी रहा है। मौर्यशासन पाँच विभागों में विभक्त था-

1. उत्तरापथ
2. पश्चिमचक्र
3. दक्षिणापथ
4. कलिंग
5. मध्यप्रदेश

इनकी राजधानियाँ क्रमशः तक्षशिला, उज्जयिनी, सुवर्णगिरि, तोशाली और पाटलीपुत्र थीं।ये पाँचो भाग कई चक्रों एवं मण्डलों में विभक्त थीं। मण्डलों के अन्तर्गत कई गाँव हुआ करते थे। मौर्यकाल के पूर्व के छोटे-छोटे राज्य या जनपद संयुक्त होकर विशाल भूभाग में बदल चुका था। भास के द्वारा वर्णितसमाजिक स्थिति, उद्योग, व्यापार, कला, संस्कृति आदि का वर्णन चैथे अध्याय में कर चुके हैं। यहाँ पर राजनैतिक स्थितियों पर विचार करना प्रासंगिक होगा।

अंगदेश

अंगदेश का उल्लेख महाभारत में आया है। यह दुर्योधन के द्वारा कर्ण को दिया गया था। वर्तमान में यह भागलपुर से मुंगेर तक फैला हुआ है। पहले इसकी राजधानी चम्पापुरी थी। आज यह भागलपुर से दो किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। कनिंघम ने इसे भागलपुर से चैबीस मील दूर पत्थरघाटा पहाड़ी के पास चम्पापुर या चम्पापुरी सिद्ध किया है। प्राचीन भारत में चम्पापुरी एक प्रसिद्ध नगार के में विख्यात था। औप्पातिक सूत्र में कहा गया है कि यह एक व्यापारिक केन्द्र भी था। यहाँ लोग दूर-दूर से व्यापार करने के लिए आते थे। इसका उल्लेख रामायण में भी किया गया है। रामायण के आधार पर यह रोमपाद की राजधानी थी तथा महाभारत में यह कर्ण की राजधानी के रुप में चर्चा की गई है। प्राचीन महाकाव्यों के अध्ययन से पता चलता है कि यह कभी अंग,वंग और कलिंग ये तीनो ऐसे प्रदेश थे जहाँ के लोगों की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति में समानताएं थीं। महाकाव्यों के वर्णनों के आधार पर कहा जा सकता है कि यहाँ के लोग सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं शैक्षिक दृष्टि से बहृत ही पिछड़े हुए थे। बौद्ध एवं जैन ग्रन्थों के अनुसार श्रेणिक बिम्बिसार को इस प्रदेश का स्वामी माना गया है। पालित्रिपिटक में अंग और मगध को एक साथ रख कर अंगमगधा के नाम से उल्लेख किया गया है। चम्पेय जातक के अनुसार चम्पा नदी इन दोनों स्थानों की विभाजिका रेखा थी। इस नदी के पूर्व और पश्चिम दोनो ओर ये जनपद बसे हुए थे। अंग जनपद की पूर्वी सीमा में राजमहल की पहाड़ियाँ और उत्तरी सीमा में कोशी नदी, दक्षिण में सागर का विस्तार था। पार्जिटर ने पूर्णिया जिले के पश्चिम भाग को भी अंग जनपद ही स्वीकार किया है।

सौवीर

भास की रचना अविमारक में इस प्रदेश का नाम आया है। इसकी वर्तमान पहचान के सम्बन्ध में विद्वानों में परस्पर विरोध पाया जाता है। कनिंघम के अनुसार बादरी का ही नामान्तर सौवीर है। रायडेवीड्स ने गुजरात के कठियाबाड़ के उत्तर में इसे स्वीकार किया है। अन्य विद्वानों की राय में सिन्धु सौवीर सिन्ध का ही एक भाग है। मार्कण्डेय पुराण में सिन्धु और सौवीर को दक्षिण भाग का प्रदेश स्वीकार किया गया है। अल्वरुनी के अनुसार मुल्तान और जहरवार ही सौवीर है। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल सिन्धप्रान्त के नीचले भाग को सौवीर माना है। उनके अनुसार सिन्ध के नीचले काठे का पुराना नाम सौवीर है। यह सत्य है कि सौवीर जनपद प्राचीन भारत का एक समृद्ध राज्य था। यह एक बड़े व्यापारिक केन्द्र के रुप में सिन्धु और झेलम से लेकर मुल्तान तक फैला हुआ था।

सौराष्ट्र

प्रतिज्ञायौगन्धरायण के दूसरे अंक में सौराष्ट्र का उल्लेख आया है। यह वर्तमान में गुजरात के कठियाबड़ के पास माना जाता है। रामायणकाल में यह प्रदेश सिन्धु से भड़ोच तक

फैला हुआ था। महाभारत में दक्षिणवर्तीय तीर्थों के वर्णन प्रसंगों सौराष्ट्र देश के कई क्षेत्रों का उल्लेख किया गया है जिनमें चमसोद्भेद, प्रभासक्षेत्र, पिण्डारक, उर्जयन्त आदि पुण्य स्थानों का वर्णन है। यह जनपद व्यापार का भी एक बड़ा केन्द्र था।इस प्रदेश पर मौर्यों का शासन था।जनश्रुति के अनुसार श्रीकृष्ण का रुक्मिणी के साथ कठियाबाड़ के निकट माधवपुर में हुआ था।

वंग

इस राज्य की गणना भारत के प्राचीन नगरों में की गई है। भारतीय इतिहास में यह जनपद न केवल एक व्यापारिक केन्द्र के रुप में विख्यात था अपितु शिक्षा, कला और सांस्कृतिक भूमि के रुप में भी यह विख्यात था। यहाँ दूर-दूर के व्यापारी जल एवं स्थल मार्ग से व्यापार करने के लिए आया करते थे। यह जनपदअंग के पूर्व और सुम्ह के उत्तरपूर्व में स्थित था। महावंश नामक बौद्धग्रन्थ में वंगजनपद के राजा सिंहबाहु का उल्लेख आया है। कुछ विद्वानों ने ब्रह्मपुत्र और पद्मा के बीच के भूभाग को ही वंग प्रदेश माना है। मजुमदार का मत है कि वंग पश्चिम में ब्रह्मपुत्र, उत्तर में गंगा, पूर्व में मेघन और दक्षिण में खसी पर्वत से घिरा हुआ है। पार्जिटर ने आधुनिक मुर्शिदाबाद को ह ीवंग माना है।

मत्स्य

बौद्धसाहित्य के आधार पर यह सोलह जनपदों में से एक है। यह वर्तमान में राजस्थान के में अलवर, जयपुर और भरतपुर के स्थान ओ हैं। ऋग्वेद की ऋचाओं में मत्स्य सुदास का विरोधी व्यक्ति के रुप चर्चित है। शतपथ ओर गोपथ ब्राह्मण में मत्स्य देश का नाम आया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी इस प्रदेश का उल्लेख आया है। कौटिल्य के समय इस प्रदेश ने अपनी राजतन्त्रात्मक व्यवस्था को खो दिया था। उनके समय यह एक गणतन्त्र राज्य के रुप में स्थापित हो गया था।

शौरसेन

इस जनपद का उल्लेख भास के प्रतिज्ञायौगन्धरायण आया है। कवि ने इस नाटक के दूसरे अंक के आठवें श्लोक में किया है। इसके अलावे बालचरितम् में भी कवि इस प्रदेश का उल्लेख करता है। इस जनपद की स्थिति वर्तमान मथुरा के आसपास मानी जाती है। प्राचीन भारत में मथुरा, गोकुल, वृन्दावन, आगरा अदि को शौरसेन प्रदेश कहा जाता था। महाभारत के एक प्रसंग में कहा गया है कि दक्षिण विजय के समय सहदेव इन्द्रप्रस्थ से प्रस्थान कर सबसे पहले इसी प्रदेश पर आक्रमण किया था और उस पर विजय प्राप्त की थी। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में इस जनपद के लोग सम्मिलित हुए थे।जैनसाहित्य में भी इस जनपद का उल्लेख किया गया है। यहाँ देवनिर्मित स्तूप भी बने थे जिनका अवशेष आज भी मौजूद है। ग्रीक इतिहासकारों ने भी शौरसेन जनपद के महत्त्व को अंगीकार किया है। शक्तिसंगम क्षेत्र में शूरसेन का विस्तार उत्तरपूर्व में तथा पश्चिम में विन्ध्य तक फेला हुआ बतलाया गया है। महाभारत और अन्य पुराणों से भी पता चलता है कि इस प्रदेश पर यदु नाम की जाति निवास करती थी। इस जनपद के नामकरण के पीछे यह तर्क दिया जाता है कि वसुदेव के पिता शूर के नाम पर इसका नाम शैरसेन पड़ा। वायु पुराण की कथा के अनुसार शूरसेन के बाद शत्रुघ्न के पुत्र ने इस नाम से शौरसेन प्रदेश को प्रसिद्धि दिलाई थी।

अवन्ती

कवि ने इस प्रदेश का उल्लेख स्वप्नवासवदत्तम् तथा प्रतिज्ञायौगन्धरायण में किया है। वर्तमान में यह मालवा का प्रदेश आता है। प्राचीन काल में इसकी राजधानी उज्जयिनी थी। मत्स्यपुराण में इसे वीतिहोत्र के नाम से जाना गया है। महाभारत में नर्मदा के दक्षिण भाग में स्थित प्रदेश को उज्जयिनी माना जाता है। मत्स्यपुराण की कथा के अनुसार कार्तवीर्य के कुल में अवन्ति नामक राजकुमार का जन्म होता है। उस प्रतापी राजकुमार के कारण इसका नाम अवन्ति रखा गया है। महर्षि पाणिनि के द्वारा रचित अष्टाध्यायी के गणपाठ 4/2/82 तथा 4/2/17 में इस प्रदेश का उल्लेख आया है। बौद्ध साहित्य में उज्जयिनी से लकर महिष्मती तक का प्रदेश अवन्ति के नाम से जाना जाता है। प्रसिद्ध सम्राट् विक्रमादित्य भी इस प्ररदेश के शासक हुए थे। अवन्ती के बारे में अनेक लोकथाएं भारतीय साहित्य और समाज में प्रचलित हैं। महाभारतकाल में विन्द और उपविन्द नामक दो भाइयों के द्वारा शासन किये जाने की भी कथा है। कभी वह जनपद नर्मदा के तट पर स्थित था।

विदेह

महाराजा जनक विदेह के शासक थे। मिथिला कभी इसी देश के अधीन था। यह विदेह की राजधानी भी थी। ब्राह्मणकाल तक यहाँ राजतन्त्र स्थापित था। रामायण की कथा के अनुसार इस राज्य की स्थापना निमि के द्वारा की गई थी। राजा जनक इसी वंश के थे। राजा जनक के पिता मिथि और दादा निमि थे। जातककथाओं के अनुसार विदेह के विस्तृत राज्य के अन्तर्गत तीन सौ मण्डल और सोलह हजार गाँव थे। बौद्ध साहित्य के अनुसार सोलह जनपदों में विदेह का भी नाम

www.ignited.in

लिया गया है। महाकवि भास ने प्रतिज्ञायौगन्धरायण में इसका उल्लेख किया है।

लंका

भास ने लंका का उल्लेख अपने दो नाटकों में किया है। प्रतिमा और अभिषेक में कई जगहों पर कवि ने इसका वर्णन किया है।लंका की पहचान के सम्बन्ध में विद्वानों के विभिन्न मत पाये जाते जाते हैं। कुछ विद्वान् इसे भारत के मध्य में होना स्वीकार करते हैं तो कुछ भारत के बाहर मिस्र या सिलोन में इसकी स्थिति को स्वीकार करते हैं। डे. ने प्रमाणित किया है कि लंका और सिलोन एक नहीं ही है। पुराणों के अनुसार लंका और सिंघल अलग-अलग हैं। वराहमिहिर के अनुसार लंका और उज्जैन एक ही रेखांश पर स्थित हैं।

मद्र

भास के ऊरुभंग नाटक में मद्र देश का नाम आया है। यह जनपद अति विस्तृत भूभाग में स्थित था। रावी से लेकर झेलम नदी तक इसका विस्तार था। बीच की चिनाव नदी इसे दो खण्डों में विभाजित करती थी। झेलम और चिनाव के मध्य का भाग अपर मद्र गुजरात जिला और चिनाव रावी के बीच का भाग स्यालकोट गुजराँवाला पूर्व मद्र कहलाता था। इस प्रदेश की राजधानी शाकल थी। महाभारत आदि पर्व में बताया गया है कि भीष्म अपने मन्त्रियों, ब्राह्मणों और सेनाओं के साथ इस प्रदेश में आकर शल्य से पाण्डु के लिए माद्री का हाथ मांगा था। मद्र जनपद के लोग युधिष्ठिर के लिए उपहार लेकर भी गए थे। महाभारत मे ही कर्ण के प्रसंग में इसका उल्लेख किया गया है। कर्ण ने मद्र, वाहिक आदि राज्यों की आचार हीनता पर व्यंग्य किया है। महाकवि भास ने ऊरुभंग में इस प्रदेश को एक समृद्ध जनपद के रुप में वर्णन किया है।

उत्तरकुरु

स्वप्नवासवदत्तम् में कवि ने उत्तरकुरु प्रदेश का उल्लेख किया है। सम्भवतः यह कुरुदेश ही था। ऋग्वेद में भी इसका उल्लेख किया है। मूलतः यह हिमालीय प्रदेश था। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार उत्तरकुरु मद्रास के निकट का एक स्थान है। रामायण में पूर्वी तुर्किस्तान को उत्तरकुरु बतलाया गया है। महाभारत में तिब्बत को उत्तरकुरु के रुप में उल्लेख किया गया है। महाभारत के समय हरिवर्षभ के नाम से इसका उल्लेख किया गया है। महाकाव्यों के अध्ययन से पता चलता है कि कभी यह जनपद भारत का एक अतिप्रसिद्ध जनपद था, व्यापार शिक्षा के क्षेत्र में इसका बड़ा नाम था। प्राचीन साहित्यों के अध्ययन से यह भी कहा जा सकता है कि कश्मीर और तिब्बत इसी के अन्तर्गत आते थे।

मगध

कवि ने इस प्रदेश का उल्लेख स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम अंक में किया है। इस जनपद की सीमा उत्तर में गंगा और दक्षिण में शोणनदी पूर्व में अंग और पश्चिम में सघन वनों के बीच अवस्थित था। इतिहास के पन्नों पर यह स्थान अतिप्रसिद्ध है। इसकी राजधानी राजगृह थी। महाभारत में इसे कीकट प्रदेश के नाम से जाना गया है। वायुपुराण में भी इसे कीकट कहा गया है।शक्तितन्त्र में कालेश्वरकालभैरव वाराणसी से लेकर सीताकुण्ड मुंगेर तक मगध देश माना गया है। प्राचीन मगध का विस्तार पश्चिम में कर्मनाशा और दक्षिण में दामोदर नदी के स्रोत तक रहा है। ह्वेनसांग की गणना के अनुसार मगध जनपद की सीमा की परिधि मण्डलाकार रुप में 833 मील थी। इसके उत्तर में गंगा, पश्चिम में वाराणसी, पूर्व में हिरण्य पर्वत और दक्षिण में सिंहभूमि वर्तमान थी। मगध जनपद के नामाकरण के सम्बन्ध में प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान् अश्वघोष का विचार है कि इस राज्य के सम्बन्ध में बहुधाप्रपंचिनी है। इसके बारे में अनेक प्रकार की किंवदन्तियाँ हैं। एक किंवदन्ती में कहा गया है कि राजा चेतीय असत्य भाषण के कारणपृथ्वी में प्रविष्ट होने लगे तो एक व्यक्ति ने उन्हें मना करते हुए कहा कि मागधम् पविस पृथ्वी में प्रवेश मत करो। दूसरी कथा के अनुसार राजा चेतीय के धरती में प्रवेश करने पर वहाँ के लोगों ने जब धरती को खोदने लगे तो कुछ लोगों ने कहा कि मागधु करोथ। इन जनश्रुतियों के अनुसार इसे मागध के रुप में ख्याति प्रसिद्धि मिली।

कुरुजांगल

भास ने अपने नाटकों में कुरु और कुरुजांगल इन दोनों शब्दों का प्रयेग किया है। गंगा और यमुना नदी के बीच स्थित मेरठ का भूभाग इस जनपद में सम्मिलित था। इसकी राजधानी हस्तिनापुर थी। थानेश्वर और हिसार या गंगा, यमुना और सरस्वती के बीच का का स्थान कुरुजांगल के नाम से प्रसिद्ध था। वस्तुतः कुरु जनपद और कुरुजांगल दोनों ही एक दूसरे से जुड़े हुए थे। महर्षि पाणिनि ने मे भी इन दोनों प्रदेशों का उल्लेख किया है। इन दोनों जनपदों में हिरण्यवती,कौशिकी, अरुणा, अप्या और सरस्वती नदियाँ प्रवाहित होती थीं।

कशी

कवि ने इस जनपद का उल्लेख अविमारक के छठे अंक और प्रतिज्ञायौगन्धरायण के दूसरे अंक में किया है। इस जनपद के अन्तर्गत वर्तमान उत्तरप्रदेश के गाजीपुर, जौनपुर, वाराणसी, आजमगढ़ मिर्जापुर आदि स्थान आते हैं। इतिहास के पन्नों से पता चलता हैकि कभी काशी और कोशल गणराज्य के अठारह राजाओं ने मिलकर वैशाली पर आक्रमण करके चेटक को पराजित किया था। काशीनरेश शंख की शासनावधि में इस जनपद की लोकप्रियता भारतवर्ष में प्रसिद्ध रही है। बुद्ध के समय यह अत्यन्त ही समृद्ध राज्य था। ब्राह्मण काल में धृतराष्ट्र नामक राजा ने अश्वमेघ यज्ञ किया था। महाभारत की कथा में उल्लेख आया है कि प्रतर्दन नामक राजा का इस पर शासन था। जातक कथा के अनुसार ब्रह्मदत्त ने भी इस पर शासन किया था।

दक्षिणापथ

दक्षिणापथ दक्षिण भारतीय राज्य का सूचक है। पाणिनि के अष्टाध्यायी में भी इस प्रदेश का उल्लेख किया गया है। उन्होंने इसे दाक्षिणात्य कहा है। बौधायन के शूल्वसूत्रों में भी इसे सौराष्ट्र के साथ दाक्षिणात्य का भी नाम दिया है। बाद के अध्ययनों से यह सिद्ध किया गया है कि ये दोनों एक नहीं अपितु अलग-अलग प्रदेश हैं। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार इसी प्रदेश से आर्यों का भारत में प्रवेश हुआ था। विन्ध्य को पार करके आर्यों का दक्षिण में प्रवेश हुआ था। महाकवि भास के नाटकों से प्रतीत होता है कि यह प्रदेश दक्षिण भारतीय प्रदेश है। इसकी सीमा कलिंग तक फैली हुई थी।

अयोध्या

इसका वर्णन प्रतिमा और अभिशेक नाटक में किया गया है। इसकी समृद्धि से देवगण भी आकर्षित होते थे। राम की जन्मभूमि होने के कारण यह लोकविख्यात था। इसकी स्थापना मानवेन्द्र मनु ने की थी जो इक्ष्वाकु वंश के प्रथम राजा थे। कवि ने इसकी राजनीतिक अभ्युदय का उल्लेख किया है। इसकी सड़कें अति विस्तृत एवं चैड़ी थीं। मार्गों के दोनो ओर उन्नत भवन खड़े थे। भवनों की विशालता के साथ उनमें हीरे मोती जडे थे। भवनों के दोनो ओर दुकानों की पंक्तियाँ।

उज्जैनी

इसका उल्लेख स्वप्नवासवदत्तम् और प्रतिज्ञायौगन्धरायण में किया गया है। यह नगर भारत का एक प्राचीन नगर है। स्कन्दपुराण में इसका वर्णन पाया जाता है। यह अवन्तीदेश की राजधानी थी। प्रतिज्ञायौगन्धरायण के अनुसार इस देश की राजकुमारी वासवदत्ता का अपहरण उदयन ने किया था। भारतीय राजनीति में इस नगर की पर्याप्त चर्चा की गई है। कथासरित्सागर के लेखक सोमदेव अनुसार इस नगर का नाम पद्मावती और भोगवती था। बौद्धकाल में भी यह नगर प्रसिद्ध था। यह प्राचीन भारत का एक व्यवसायिक नगर था। इसका व्यापार अन्य जनपदों तक फैला हुआ था।

मथुरा

महाकवि भास ने मथुरा का उल्लेख बालचरितम् में किया है। यह शौरसेन प्रदेश का राजधानी थी। वर्तमान मथुरा से अलग इसकी स्थिति थी। यमुना की धारा बदल जाने के कारण पुरानी मथुरा का स्थान बदल चुका है। बालचरितम् के प्रथम अंक और पंचम अंक में कवि ने इसका उल्लेख किया है। यह भगवान् श्रीकृष्ण से संबंधित भूमि है। कंस के अत्याचारों से मुक्ति दिलो के लिए श्रीकृष्ण का बलभद्र के साथ यहाँ पर आगमन हुआ था। श्रीकृष्ण की जन्मदात्री माता मथुरा की राजकुमारी थी।

राजगृह

कवि ने स्वप्नवासवदत्तम् में इस प्रदेश का वर्णन किया है। भारत के प्राचीन इतिहास में इस नगर के कई नाम मिलते हैं जैसे क्षिति-प्रतिष्ठित, चणकपुर, ऋषभपुर, कुशाग्रपुर, गिरिव्रज आदि। राजगृह पाँच पर्वतों से आच्छादित है। महाभारत में भी इस नगर का उल्लेख किया गया है। सरस्वती नदी इस नगर में प्रवाहित होती थी। सरस्वती के अलावे बाणगंगा इसके दक्षिण में प्रवाहित होती थी। रामायण के समय इस प्रदेश में शोण नदी बहती थी। मौर्यकाल अते-आते इसकी समृद्धि क्षीण हो गई थी। मौर्यों ने राजगृह पर ध्यान न देकर पाटलिपुत्र पर ध्यान दिया था। बुद्ध के समय का बेणुवन इसी प्रदेश के निकट था। बिम्बसार के समय इस नगर का पुनरुद्धार किया गया था। बिम्सार पहले बुद्ध का अनुयायी था परन्तु बाद में तीर्थंकर महावीर के उपदेशों से प्रभावित होकर जैन धर्म को अंगीकार कर लिया था। तीर्थंकर महावीर का धर्मोपदेश राजगुह में भी हुआ करता था। महावीर के उपदेशों का प्रधान श्रोता श्रेणिक होता था। जैन धर्मग्रन्थों में श्रेणिक का नाम लिया गया है। भास ने मगध के राजा दर्शक की राजधानी राजगृह बताया है। इस नगर के बाहर आश्रम बने होते थे।

लंका

कवि ने लंका का उल्लेख प्रतिमा और अभिषेक नाटक में किया है। यह रावण का राज्य था। यह बहुत ही समृद्ध और सुन्दर प्रदेश के रुप में विख्यात है। अभिषेक नाटक में इसकी सम्पन्नता का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

कनकरचितचित्रतोरणाढ्या,

मणिवरविद्रुशोभितप्रदेशः।

विमलविकृतसंचिततैर्विमानैः,

वियति महेन्द्रपुरीव भाति लंका।।2

लंका में सोने के बने हुए तोरण द्वार हैं जो इसकी सम्पन्नता को सूचित करते हैं। पूरे प्रदेश में मूंगे और प्रवाल जड़े हैं। इस नगर की स्वच्छता और वैभव स्वर्गतुल्य थी। विमानों का परिचालन होता था। रामायण के अनुसार यह बीस योजन लम्बी और दस योजन चैड़ी नगरी थी। महाकवि भास ने इस नगरी की सुन्दरता और वैभव का विस्तार से वर्णन किया है। धूप के समय इसके विशाल भवन उज्ज्वल दिखते थे। त्रिकूट पर्वत पर स्थित इसके विशाल प्रासाद सोने से बने ऐसे लगते थे मानो अन्तरिक्ष में स्थित कोई अलौकिक पुरी हो।

शासन व्यवस्था

भास के नाटकों में राजकीय शासन व्यवस्था उत्तम कोटि की थी। न्याय, दण्डविधान, युद्ध, सैन्यसंचालन, राष्ट्रनीति आदि विषयों के बारे में पर्याप्त उल्लेख पाया जाता है। राजकीय प्रशासन का मूल उद्देश्य प्रजाओं के लिए सुख और शान्ति की व्यवस्था की स्थापना को माना जाता था। राजदण्ड का भी विधान था। अपराधियों के लिए अपराधानुकूल सजा की व्यवस्था थी। प्रजाओं के बीच परस्पर एकता और बन्धुता की भावना को विकसित करने के लिए अधिकारियों को भी नियुक्त किया जाता था। राजा हमेशा प्रजाओं के हित के लिए प्रयत्नशील रहा करे थे।

अविमारक में एक राजा के गुणों पर प्रकाश डालते हुए कुन्तीभोज का कथन है-

राजा को सबसे पहले धर्मनीति का विचार करना चाहिए, उसके बाद अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए मन्त्रियों के साथ विचार-विमर्श कर उनकी गतिविधियों पर भी हमेशा दृष्टि डलनी चाहिए। एक राजा को अपने राग-द्वेष को छिपाना चाहिए। एक राजा को यथासमय कठोरता एवं सरलता का प्रयोग करना पड़ता है। उसे गुप्तचर रखने पड़ते हैं। प्रजा के साथ अपनी रक्षा के लिए सदा उद्यत रहना चाहिए एवं राज्य की रक्षा के लिए युद्ध के लिए भी प्रस्तुत रहना चाहिए-

धर्मः प्रागेव चिन्त्यः सचिवमतिगतिः पे्रक्षितव्या स्वबुद्धया,

प्रच्छाद्यौ रागरोषौ मृदुपरुषगुणौ कालयोगेनकार्यौ।

ज्ञेयं लोकानुवृत्तं परचरनयनैर्मण्डलं प्रेक्षितव्यं,

रक्ष्यो यत्नादिहात्मारणशिरसि पुनःसोऽपि नावेक्षितव्यः।।5

उपसंहार

भास के नाटकों में राजनीति का जो चित्रण किया गया है वह तात्कालिक राजनीतिक व्यवस्था का सूचक माना जा सकता है। भले ही उनके नाटक रामायण एवं महाभारत काल की कथाओं पर आधारित हैं फिर भी कवि अपने समय की राजनीतिक व्यवस्था के स्वरुपों की छाया प्रदान करने से बच नहीं पाया है। वस्तुतः कवि किसी भी काल की धटना का आधार लेकर रचना को आयाम देता है वह अपने समय की परिस्थितियों की छाप कहीं न कहीं अवश्य छोड़ता है। भास ने अपने नाटकों के माध्यम से तात्कालिक राजनीति के सारे पक्षों को पाठकों के सामने लाने का प्रयास किया है। उन्होंने राजनीति के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों का उल्लेख किया है। नकारात्मक पक्षों के वर्णन के पीछे उनका ध्येय राजनीति को सही दशा एवं दिशा दिखाना ही है। भारतीय राजनीति में धर्म एवं आध्यात्म आधारस्वरूप् में माने गए हैं। कवि भास ने राजनीति पर धर्म और आध्यात्म का अंकुश लगा कर उसे सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय का संदेश भी दिया है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. श्री विद्याचक्रवर्ती काव्यप्रकाश टीका प्र.4
2. के. आर. पी. सारथी इण्डियन हिस्टोकरिकल क्वार्टरली प्र. 105
3. राजशेखर
4. डॉ. राजा जर्नल ऑफ़ ओरिएन्टल रिसर्च मद्रास पृ. 227
5. कर्णभारम् 1-22

6. कर्णभारत् 1-23

7. पंचरात्रम् 12-29

8. प्लुस्कर भास ए स्टडी पृ. 108

9. स्वप्नवासवदत्तम् 1-4

10. स्वप्नवासवदत्तम् 1-11

11. प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् 1-12

12. प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् 2-2

Corresponding Author

Rajni Mudgal*

Research Scholar, Swami Vivekanand University, Sagar (M.P.)